DEPARTMENT OF HISTORY

B.A. PART-III

TOPIC — द्वितीय अफीम युद्ध कारण एवं परिणाम 1856-60 ई०

NAME OF FACULTY — DR. MD. MOSHARRAF-HOSSAIN

MOB NO - 8084574945

Scanned with CamScanner

द्वितीय अफीम युद्ध :— 1856-60 ई०

प्रथम अफीम युद्ध के पश्चात नानकिंग और बोग की सन्धि द्वारा इंग्लैण्ड की धाक पूर्वीय देशों में जम गई। इंग्लैण्ड ने स्वर्गीय साम्राज्य चीन के दिव्य सम्राट की उच्चता की भावना को त्यागने के लिए विवश कर किया तथा बर्बर जाति के प्रतिनिधि के स्थान पर समानता के आधार पर कूटनीतिक एवं राजनयिक का स्तर प्राप्त किया। ब्रिटेन की इस सफलता को देख कर यूरोप के अन्य देशों ने भी चीन से इसी प्रकार के सबंध बनाने का प्रयास किया। ~~(इसके फलस्वरूप 3 जुलाई 1844 ई० को अमेरिका के साथ, 24 अक्टूबर 1843 ई० को फ्रांस में तथा 20 मार्च 1847 ई० में नार्वे और स्वीडन से पृथक-पृथक सन्धियां हुई।)~~

→ नानकिंग की सन्धि के पश्चात कई ~~यूरोपीय~~ यूरोपीय देश भी चीन के साथ व्यापार सन्धि के प्रस्ताव लेकर पहुँचे। चीन ने इन देशों के साथ भी व्यापार सन्धियां की अमेरिका तथा फ्रांस के साथ की गई सन्धियों में इस बात की भी व्यवस्था की गई थी कि दस वर्ष पश्चात इन सन्धियों को पुनः दोहराया जायेगा। अंग्रेज व्यापारी भी 1842 ई० चीन के साथ की गई संन्धि को दोहराना चाहते थे। अंग्रेज सन्धियों में और अधिक विस्तार चाहते थे।
अतः जब इन विदेशी शक्तियों ने चीनी सरकार के समक्ष सन्धि पुनरीक्षण की मांग रखी तो उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया। परिणामस्वरूप विदेशीयों विशेषतः अंग्रेजों को स्पष्ट हो गया की बिना शक्ति प्रयोग के सन्धि पुनरीक्षण नहीं हो सकता। अतः द्वितीय अफीम युद्ध की परिस्थिति निर्मित हुई। द्वितीय अफीम युद्ध के अन्य प्रमुख कारण निम्नलिखित थे। →

Scanned with CamScanner

II अफीम युद्ध — 1856-60 ②

① चीनी शासकों का भ्रम और अयोग्यता →

चीनी मंचू शासक प्रथम अफीम युद्ध में हुई अपनी हार को अस्थायी एवं दुर्भाग्यपूर्ण मानते थे परन्तु इसे घातक कदापि नहीं। उन्हें अब भी यह विश्वास था कि वह विदेशीयों को नियंत्रण में रख सकते हैं एवं अपनी अखण्डता की रक्षा करने में सक्षम हैं- जो उनका एक मिथ्या भ्रम मात्र था। वस्तुतः प्रथम अफीम युद्ध की हार ने मंचू शासकों की अयोग्यता एवं अक्षमता को उजागर कर दिया था। देश में भ्रष्टाचार, शोषण, बेकारी, भुखमरी, षड्यंत्र एवं अफीम की तस्करी के कारण स्थिति दुर्बल एवं अराजकतापूर्ण होती जा रही थी। इन परिस्थितियों से पश्चिमी शक्तियाँ लाभ उठाकर अपनी साम्राज्यवादी महत्वकांक्षाओं को सन्तुष्ट करना चाहती थी।

② चीन में नानकिंग की सन्धि से असन्तोष :→

चीनी लोग 1842 ई० की नानकिंग सन्धि तथा विदेशीयों के लिए 5 बन्दरगाह खोल दिया जाना अपमानजनक मानते थे। चीनी सरकार पर भारी भरकम क्षतिपूर्ति देना स्वीकार करना पड़ा था। अतः वहाँ विदेशियों के प्रति तीव्र घृणा की भावना व्याप्त थी।

③ चीनीयों को बलपूर्वक मजदूर बनाया जाना →

चीन में व्याप्त बेकारी और भुखमरी का लाभ उठाकर विदेशीयों ने चीनियों को मजदूर के रूप में क्युबा एवं पेरु आदि स्थानों पर भेजा एवं बल प्रयोग भी किया। मंचु शासन ने इसका विरोध किया।

Scanned with CamScanner

④ चीनी जहाजों से वसूली → विदेशीयों ने जल डाकुओं को पकड़ने के बहाने चीनी जहाजों से उनकी रक्षा के नाम पर काफी धनराशी वसूल की। जिसकी वजह से चीन में काफी रोष था।

⑤ व्यापारिक सुविधाओं के विस्तार की इच्छा :→
ब्रिटिश व्यापारी नानकिंग की सन्धि पर पुनर्विचार एवं और अधिक विस्तार चाहते थे। फ्रांस व अमेरिका ने भी इसका समर्थन किया। उनकी प्रमुख मांगो में →
(1) चीन के आन्तरिक भागों में प्रवेश की सुविधा।
(2) पीकिंग में राजदूत रखने की सुविधा।
(3) शुल्क दरें समाप्त करने की सुविधा आदि प्रमुख थीं।
1854 ई० में ब्रिटिश उच्चायुक्त लार्ड बोरिंग ने यह प्रस्ताव रखे। चीनी प्रशासन ने इन मांगों की उपेक्षा की। अतः बल प्रयोग अपरिहार्य हो गया।

⑥ फ्रांसीसी पादरी को फाँसी → इंग्लैण्ड की तरह फ्रांस भी चीन से सन्धि की शर्तों को दोहराने के पक्ष में था। हालांकि फ्रांस व्यापारिक शक्ति के रूप में महत्वहीन था किन्तु उसकी विशेष दिलचस्पी रोमन कैथोलिक पादरियों व गिरजाघरों की रक्षा करने में थी। वर्ष 1856 ई० में फ्रांस के रोमन कैथोलिक पादरी आगस्ते-चैपडेलन को गिरफतार कर लिया गया और क्वांग्सी के स्थानीय अधिकारी ने उसे फ्रांसी की सजा दे दी। उस पर यह आरोप था की वह चीन में ऐसी विचारधारा फैला रहा था जो विद्रोहाग्नि भड़का सकती थी तथा वह बिना आज्ञा चीन के अन्दरूनी हिस्से में चला गया था। फ्रांस इसके लिए चीन को दण्डित करना चाहता था। फ्रांस की क्षतिपूर्ति की माँग अस्वीकार होने पर फ्रांसीसी सेना भी कैन्टन पर गोलीबारी करने में अंग्रेजों के साथ शामिल हो गयी।

Scanned with CamScanner

द्वितीय अफीम

(7) **लोर्चा एरो जहाज की घटना** → यह घटना युद्ध का तात्कालिक कारण बनी। कैन्टन के समीप एक लोर्चा एरो नामक जहाज लंगर डाले हुए पड़ा था। इस जहाज का मालिक चीनी था, परन्तु उसका कप्तान एक अंग्रेज था और इस पर ब्रिटिश झण्डा लगा हुआ था। चीनी अधिकारी जल दस्युओं को पकड़ना चाहते थे। चीनी वायसराय के आदेश पर कुछ चीनी लोगों ने इस जहाज पर जाकर उसके बारह (12) नाविकों को गिरफ्तार कर लिया। उन पर यह आरोप लगाया गया कि वह समुद्री लूट के कार्य में शामिल थे। अंग्रेजों ने माँग की कि इन नाविकों को लौटाया जाए। चीनी लोगों ने इस माँग को अस्वीकार कर दिया। बाद में चीनी शासन ने बन्दियों को मुक्त कर दिया किन्तु क्षमा माँगने से इन्कार कर दिया। अंग्रेजों को युद्ध का बहाना मिल गया।

→ **युद्ध की घटनाएँ** → इंगलैण्ड और फ्रांस दोनों देश सन्धि पुनरीक्षण के लिए किसी भी कीमत पर चीन से युद्ध करना चाहते थे। एरो युद्धपोत तथा रोमन कैथोलिक पादरी की हत्या ने युद्ध को आमन्त्रित किया था। 1856 ई० में ब्रिटिश सेना ने कैन्टन पर आक्रमण कर उस पर अधिकार कर लिया था। कैन्टन को जीतकर ब्रिटिश सेनाएँ उत्तरी चीन की ओर बढ़ी। नेपोलियन III चाहता था कि क्रीमिया युद्ध की आंग्ल-फ्रांसीसी मैत्री को पुनः जीवित किया जाय और दोनों देश मिलकर चीन पर आक्रमण करें, अतः युद्ध की घोषणा कर दी गई। यद्यपि 1857 ई० के आरम्भ में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के आरंभ हो जाने से चीनी आक्रमण में कुछ विलम्ब हुआ, फिर भी 1858 ई० में एक छोटे से युद्ध के बाद चीन झुक गया और सन्धि के लिए तैयार हो गया।

Scanned with CamScanner

टीएंटसिन की सन्धि → टीएंटसिन में चीनी अधिकारियों एवं फ्रांस तथा इंग्लैण्ड के प्रतिनिधियों के बीच सन्धि के लिए बातचीत आरंभ हुई। 1858 ई० में यद्यपि टीएंटसिन में सन्धि की शर्तों के सम्बन्ध में समझौता हो गया था किन्तु पीकिंग ~~के के स्वीकृत नहीं हो सका।~~ ने इसे अस्वीकार कर दिया। इस स्थिति में ब्रिटेन और फ्रांस ने एक बार पुनः चीन के विरुद्ध युद्ध आरम्भ कर दिया। दोनों देश आक्रमण करते हुए पीकिंग तक पहुँच गये। चीनी सेनाएं दोनों देशों की संयुक्त सेनाओं का मुकाबला करने में असफल रहीं; अतः पीकिंग पर अधिकार कर लिया गया। सन्धि करने के अतिरिक्त चीन के पास अन्य कोई विकल्प नहीं था। विदेशियों के साथ जो सन्धियाँ की गई उनकी मुख्य बातें निम्नलिखित हैं:→

1. चीन ने ग्यारह नये बन्दरगाह ~~यूरोपिय~~ यूरोपीय देशों के व्यापार व निवास के लिए खोल दिये।
2. पश्चिमी देशों के जहाजों को यह अनुमति दी गयी कि वे यांग्त्सी नदी में आ जा सकेंगे।
3. पश्चिमी देशों के राजदूत अब पीकिंग में निवास कर सकते थे।
4. जिन विदेशियों के पास पासपोर्ट हो, वे चीन में जहाँ चाहे स्वतंत्रतापूर्वक आ जा सकेंगे।
5. फौजदारी के मामलों में भी विदेशियों के देशोत्तर-अधिकारों (Right of Extra-territoriality) की सम्पूर्ण व्याख्या की गई।

Scanned with CamScanner

6. चीन ने युद्ध हर्जाना देना स्वीकार किया। ब्रिटेन को 40 लाख तथा फ्रांस को 20 लाख मुद्राएँ देना निश्चित हुआ।

7. अफीम पर आयात कर लगा दिया गया, जिससे अफीम का व्यापार वैध व नियंत्रित हो गया।

8. ईसाई धर्म प्रचारकों को धर्म प्रचार की अनुमति मिली उनकी रक्षा का उत्तरदायित्व चीनी सरकार का था।

9. फ्रांस के रोमन कैथोलिक पादरियों को अधिकार होगा कि वे इन सोलह बन्दरगाहों के अतिरिक्त अन्यत्र भी जहाँ चाहे भूमि खरीद सकेंगे या उस भूमि पर गिरजाघर बना सकेंगे।

10. सीमा शुल्क तालिका का भी पुनरीक्षण किया गया इसके अनुसार प्रचलित मुल्यों पर पाँच प्रतिशत उगाही स्थगित कर दी।

द्वितीय आंग्ल-चीनी युद्ध के तुरन्त बाद तक तो केवल इंगलैण्ड फ्रांस अमेरिका रूस, नार्वे और स्वीडन आदि देशों ने ही चीन के साथ सन्धियाँ की थीं किन्तु अगले 30 वर्षों में ग्यारह अन्य देशों ने भी चीन के साथ सन्धियाँ कर लीं।

युद्ध के परिणाम → इंगलैण्ड तथा फ्राँस का चीन के साथ जो युद्ध हुआ उसके परिणामस्वरूप चीन का दरवाजा युरोप के व्यापारियों के लिए पुरी तरह से खुल गया।

- चीन का अपनी आर्थिक नीति पर से नियंत्रण समाप्त हो गया और उसके आयात व निर्यात पर विदेशीयों का नियंत्रण स्थापित हो गया।
- सीमा शुल्क सम्बन्धी विदेशी निरीक्षणालय की स्थापना में तटकर जैसी महत्वपूर्ण नीति पर उसका कोई अधिकार नहीं रह गया।

→ अतः आर्थिक रूप से दिन प्रतिदिन मंचु वंश पाश्चात्य देशों पर निर्भर होता गया, जिसका इन्होंने अत्यधिक शोषण अपने साम्राज्य प्रसार के लिए किया। इसी और उसकी कमजोर सैनिक

विदेशी व्यापारियों ने इस स्थिति का खूब लाभ उठाया कि अब चीन से एक अधीनस्थ जैसा व्यवहार करें।

Scanned with CamScanner

अमरीका, इंगलैण्ड एवं फ्रांस द्वारा चीन में अपने-अपने प्रभाव के विस्तार की नीति से प्रभावित होकर अब रूस भी इस ओर आकर्षित हुआ। जार निकोलस प्रथम ने आमूर घाटी का सर्वेक्षण करवाया। तथा 1853 में उसने सखालीन द्वीपों पर अपना-आधिपत्य स्थापित कर लिया।

अब पश्चिम के धर्मप्रचारक एवं पादरी चीन में भूमि खरिद कर आलीशान भवनों का निर्माण कर उसके मालिक बन बैठे। उन्होंने अपनी बस्तियों के प्रबन्ध हेतु नगरपालिका की स्थापना भी करली।

पश्चिम का व्यापार भी दिन-प्रतिदिन चीन में बढ़ता गया। चीन में अब कुल 16 बन्दरगाह पश्चिमी-व्यापारियों के लिए खुल गए। व्यापारियों को राज्यक्षेत्रातीत अधिकार प्राप्त हो गए। इस प्रकार कहा जा सकता है की द्वितीय अफीम युद्ध की वजह से चीन की एकता एवं अखंडता तथा सम्प्रभुता को खतरा उत्पन्न हो गया। अब युरोपीय शक्तियाँ चीन के अधिक से अधिक भू-भागों पर अपना आधिपत्य स्थापित करने की होड़ में लग गई और चीन के इतिहास में चीन की लूट खसौट की सबसे महत्वपूर्ण चरण। चीन का जापान से युद्ध 1894-95 एवं अमेरिका द्वारा उन्मुक्त द्वार की नीति अपनाना था।

निष्कर्ष :→